
Shri Manasa Ashtaka Stotram

श्रीमानसाष्टकस्तोत्रम्

Document Information

Text title : Shri Manasa Ashtaka Stotram

File name : mAnasAShTakastotram.itx

Category : deities_misc, nimbArkAchArya, krishna, aShTaka, stotra

Location : doc_deities_misc

Author : shrIjI

Proofread by : Mohan Chettoor

Latest update : January 28, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

Shri Manasa Ashtaka Stotram

श्रीमानसाष्टकस्तोत्रम्



प्राणिमात्रमनोव्याधि दृश्यते वसुधातले ।

आश्चर्यं परमाश्चर्यं प्रबोलीला य वर्तते ॥ १ ॥

प्राणिमात्र की मानसिक व्यथा इस जगत् में अधिकांश दृष्टिगोचर हो रही है । वस्तुतः यह आश्चर्य से अधिकतम आश्चर्य है और इसे जगन्निघन्ता श्रीसर्वेश्वर भगवान् की अचिन्त्य माया ही समझनी चाहिए ॥ १ ॥

अतीव यञ्चलं लोके मनो भ्रमति नित्यदा ।

तन्निरोधस्तु कर्तव्यः शास्त्रचिन्तनपारगैः ॥ २ ॥

यह मन अतिशय यञ्चल है जो इस जगत् के व्यर्थ कार्यों में प्रतिपल भ्रमण करता रहता है, अतएव “श्रीमद्भगवद्गीता” “श्रीमद्भागवत” विभिन्न “रामायण” आदि उत्तमोत्तम शास्त्रों के ज्ञाताओं को चाहिए कि वे इस थपल मन का सर्वप्रकार से निग्रह करें तथा उत्तम साधकों को भी प्रेरित करें ॥ २ ॥

सत्सङ्गतिः सदा श्रेष्ठा पालनीया य सर्वदा ।

यथा हि यञ्चलस्यास्य मनसः रुजू प्रशाम्यति ॥ ३ ॥

श्रेष्ठ पुरुषों का प्रेरणादायी सङ्ग करे यह सत्सङ्गति सर्वदा ही हितप्रद है जिसके परिपालन करने पर इस अतीव द्रुतगामी यञ्चल की जो क्लेश है उसका परिशमन हो जायेगा ॥ ३ ॥

એકદા બ્રહ્મણઃ પાર્શ્વે સમાયાતા મહર્ષયઃ ।

શ્રીસનકાદયો દિવ્યા વિચરન્તો હિ પુષ્કરે ॥ ૪ ॥

એક સમય ઇસ સમ્પૂર્ણ વિશ્વ કે રચયિતા જગત્પિતા શ્રીબ્રહ્મા કે સમીપ પુષ્કરતીર્થ કે પાવન સ્થલ પર વિચરણ કરતે હુએ મહર્ષિવર્ય શ્રીસનકાદિક જિનકા દિવ્યતમ પાવન સ્વરૂપ હૈ વે પધારે ॥ ૪ ॥

ત્રિગુણાત્મકમન્તશ્ચ તથૈવ ભુવનત્રયમ્ ।

કથમન્યોન્યસન્ત્યાગઃ પ્રશ્નં ચક્રુર્મહર્ષયઃ ॥ ૫ ॥

તબ વે મહર્ષિવર્ય શ્રીબ્રહ્મા કે નિકટ આકર એક અત્યન્ત

ગૂઢતમ પ્રશ્ન કિયા કિ હે બ્રહ્મનુ! યહ મન જો ત્રિગુણાત્મક (સત્વ, રજ, તમ) સે સમન્વિત હૈ ઇસી પ્રકાર યહ ત્રિગુણાત્મક સમસ્ત જગત્ ભી હૈ અતઃ ઇસ ચરાચરાત્મક જગત્ સે યહ મન કૈસે પૃથક્ હો ॥ ૫ ॥

चिन्तातुरो जगत्स्रष्टा तदा कृष्णः कृपार्णवः ।
लंसरूपेण भूलोकेऽवततार य पुष्करे ॥ ६ ॥

महर्षिवर श्रीसनकादिकों के द्वारा प्रश्न किये जाने पर जब जगत्स्रष्टा श्रीब्रह्मा अतीव चिन्ता मग्न होगये तब कृपार्णव श्रीकृष्ण भगवान् श्रीलंसरूप में श्रीब्रह्मदेव के निकट सर्वतीर्थ गुरु श्रीपुष्कर की पावन धरित्री पर अवतीर्ण हुये ॥ ६ ॥

विधाय य समाधानमन्तर्दधान केशवः ।
सर्वेश्वरः कृपाधाम सर्वकल्याणकारकः ॥ ७ ॥

सभी ज्ञोवमात्र का कल्याण करने वाले कृपानिधि सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर कृष्णरूप श्रीलंस भगवान् ने श्रीसनकादिकों के प्रश्न का समाधान करके अन्तर्धान होगये ॥ ७ ॥

अतस्तावन्मनोव्याधिर्हातव्या य सुधीजनैः ।
तदैव ज्ञोवने शान्तिर्भवतीति सुनिश्चितम् ॥ ८ ॥

अतयेव इस मानसिक व्याधि को बुद्धिमान् पुरुषों को यादिये उसे सर्वथा त्याग करदें तभी इस मानव ज्ञोवन में निश्चित रूप से परम शान्ति प्राप्त होगी ॥ ८ ॥

श्रीमानसाष्टकं स्तोत्रं ज्ञानभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणात्नेन निर्मितम् ॥ ९ ॥


विवेक और श्रीहरिभक्ति को प्रदान करने वाला यह “श्रीमानसाष्टक स्तोत्र” जिसका प्रणयन लंसरूप श्रीकृष्ण भगवान् का ही अनुकम्पा प्रसाद है ॥ ९ ॥

इति श्रीमानसाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor

——
Shri Manasa Ashtaka Stotram

pdf was typeset on February 2, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

